नवरात्र विशेष: माँ दुर्गा के 14 अद्भुत मंदिर और उनकी अनूठी परंपराएँ(22 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025)

भारत में इस वर्ष **नवरात्र का पर्व 22 सितंबर, 2025 से 2 अक्टूबर, 2025** तक पूरे श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। नवरात्र को शक्ति की उपासना का महापर्व माना जाता है, इस रिपोर्ट में कुल **14 प्रमुख मंदिरों** का उल्लेख किया गया है। प्रत्येक मंदिर माँ दुर्गा से जुड़ी **अपनी विशिष्ट परंपराओं, मान्यताओं और धार्मिक महत्व** के लिए जाना जाता है।

S.No.	Details	Image & Source
1.	**भारत-पाक सीमा पर स्थित तनोट माता मंदिर अद्भुत आस्था का प्रतीक, जहाँ युद्ध के दौरान गिराए गए बम भी नहीं फटे** **स्थान:** जैसलमेर, राजस्थान **मंदिर:** तनोट माता मंदिर, ("बम वाली माता" के नाम से प्रसिद्ध) **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** युद्धों में इस मंदिर के आसपास गिरे हजारों बम फटे नहीं, जिससे यह चमत्कारिक मंदिर माना जाने लगा। **विवरण:** तनोट माता मंदिर 12वीं शताब्दी में भाटी राजपूत शासक महारावल लोनकावत द्वारा बनवाया गया था और यह **देवी दुर्गा के अवतार तनोट माता** को समर्पित है। 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों में इस मंदिर के आसपास गिरे हजारों बम फटे नहीं, जिससे यह चमत्कारिक मंदिर माना जाने लगा। भारतीय सेना की विजय और सुरक्षा से जुड़ी इन ऐतिहासिक घटनाओं के कारण यह मंदिर राष्ट्रीय गौरव और श्रद्धा का प्रतीक है।	 Aaj Tak Jansatta
2.	**नवरात्र पर ही खुलता है परलाखेमुंडी का रहस्यमयी दुर्गा मंदिर** **स्थान:** परलाखेमुंडी, गजपति जिला, ओडिशा **मंदिर:** दंडमारम्मा (दंडु) दुर्गा मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** वर्ष में केवल 9 दिन (नवरात्र के दौरान) खुलने वाला दुर्गा मंदिर **विवरण:** ओडिशा के गजपति जिले के परलाखेमुंडी स्थित यह दुर्गा मंदिर अपनी अनोखी परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। दंडमारम्मा या दंडु नाम से जानी जाने वाली देवी का यह मंदिर साल भर बंद रहता है **और केवल नवरात्र के 9 दिनों के लिए ही खोला जाता है**। परंपरा के अनुसार, **अंतिम दिन मंदिर के अंदर देवी को नारियल अर्पित कर दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं,** और जब अगले वर्षनवरात्र पर मंदिर पुनःखोला जाता है तो वह नारियल अक्षुण्ण पाया जाता है। यह रहस्यमयी परंपरा और अद्भुत मान्यता मंदिर को आस्था और कौतूहल दोनों का केंद्र बनाती है।	 Times of India
3.	**बिहार: 18 भुजाओं वाली, 16 कुंतल वजनीमाँदुर्गा की प्रतिमा वाला लोटस टेंपल** **स्थान:** माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार **मंदिर:** ग्रैंड लोटस टेंपल **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** कमल आकार का शिखर, 18 भुजाओं वालीमाँदुर्गा की 16 कुंतल वजनी प्रतिमा और अद्वितीय शिवलिंग **विवरण:** मुजफ्फरपुर का ग्रैंड लोटस टेंपल अपनी अनोखी संरचना और दुर्लभ मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ स्थापित **18 भुजाओं वालीमाँदुर्गा की प्रतिमा 16 कुंतल वजनी है,** जो राजस्थान के मकराना पत्थर से निर्मित और पूरे बिहार में अपनी तरह की पहली है। मंदिर का **शिखर कमल की आकृति में बना है** और इसमें 108 घंटियां लगी हैं। दक्षिणेश्वर पत्थर से निर्मित शिवलिंग हैं। यह मंदिर 20 वर्षों के लंबे संघर्ष और आस्था का परिणाम है, जो आज श्रद्धालुओं के आकर्षण का मुख्य केंद्र है।	 Amar Ujala

4.	**मां दुर्गा का अद्भुत धाम, जहां 300 वर्षों से रक्त अर्पण की परंपरा जारी** **स्थान:** बांसगांव, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश **मंदिर:** दुर्गा मंदिर (रक्त अर्पण परंपरा वाला) **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** पशु बलि रोकने के लिए 300 वर्षों से चली आ रही रक्त अर्पण की अनोखी परंपरा **विवरण:** गोरखपुर के बांसगांव स्थित यह प्राचीन दुर्गा मंदिर अपनी अद्वितीय परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। **यहाँ पशु बलि की जगह भक्त स्वयं का रक्त माता को अर्पित करते हैं।** यह परंपरा श्रीनेत वंश के क्षत्रियों द्वारा लगभग 300 वर्षों से निभाई जा रही है। विशेष मान्यता है कि **कम से कम 12 दिन के नवजात शिशु से लेकर वृद्ध तक का रक्त माता को अर्पित किया जा सकता है।** भक्त मानते हैं कि इससेमाँकी कृपा प्राप्त होती है और परिवार में सुख-समृद्धि आती है। इस परंपरा ने मंदिर को पूरे देश में अद्वितीय पहचान दिलाई है।	 TImes Now Hindi
5.	**माँ दुर्गा के मंदिर में 109 वर्षों से लगातार जल रही अखंड ज्योत** **स्थान:** गोलघर, पटना, बिहार **मंदिर:** श्री अखंडवासिनी मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** 109 वर्षों से लगातार जल रहा अखंड दीपक **विवरण:** पटना का गोलघर स्थित अखंडवासिनी मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र और एक अद्भुत रहस्य समेटे हुए है। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां 1914 से लगातार अखंड दीपक जल रहा है, जिसे आयुर्वेदाचार्य शक्तिपीठ कामाख्या से लेकर आए थे। तब से लेकर अब तक तिवारी परिवार की तीन पीढ़ियाँ इस अखंड ज्योति की सेवा में समर्पित हैं। मंदिर में माँ दुर्गा अखंडवासिनी माता के रूप में विराजमान हैं, साथ हीमाँकाली और माता बगलामुखी की प्रतिमाएं भी स्थापित हैं। यहां आने वाले भक्त माता को नौ लाल फूल और सिंदूर अर्पित करते हैं।	 News 18

6.	**दुर्गा मंदिर में दो गाँव मशालों से बरसाते हैं आस्था की आग** **स्थान:** कटेएल, दक्षिण कन्नड़, कर्नाटक **मंदिर:** श्री दुर्गा परमेश्वरी मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** नदी नंदिनी के बीच स्थित मंदिर और **विश्वप्रसिद्ध थूटेधारा (अग्निखेली) परंपरा** **विवरण:** कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ ज़िले में स्थित श्री दुर्गा परमेश्वरी मंदिर अपनी भव्यता और अनूठी परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर नदी नंदिनी के बीच स्थित है । मंदिर की सबसे अनोखी विशेषता इसका वार्षिक जत्रा महोत्सव है, **जो "थूटेधारा" नामक अद्वितीय अग्निखेली परंपरा के साथ संपन्न होता है।** थूटेधारा (तुलु भाषा में "मशाल") में **दो गाँव अठूरु और कोदेतुरु के लोग सूखी ताड़ पत्तियों से बनी जलती हुई मशालें एक-दूसरे पर फेंकते हैं।** देखने में खतरनाक लगने वाली यह परंपरा दरअसल देवी की कृपा पाने और आत्मशुद्धि का प्रतीक मानी जाती है। इसमें सैकड़ों लोग भाग लेते हैं।	 ANI News
7.	**शाकांबरी महोत्सव: माँ दुर्गा फलों और सब्ज़ियों से सुसज्जित होकर भक्तों को देती हैं भरपूर फसल का आशीर्वाद** **स्थान:** इंद्रकीलाद्री, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश **मंदिर:** श्री दुर्गा मल्लेश्वरा स्वामी वरला देवस्थानम **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** शाकांबरी देवी महोत्सव, माँ दुर्गा को फलों और सब्ज़ियों से अलंकृत करने वाला अद्वितीय उत्सव **विवरण:** विजयवाड़ा स्थित इंद्रकीलाद्री पर्वत पर बना श्री दुर्गा मल्लेश्वरा स्वामी मंदिर आंध्र प्रदेश का प्रमुख शक्तिपीठ है। यहाँ **प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला शाकांबरी देवी महोत्सव विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इस उत्सव में देवी दुर्गा को फलों और सब्ज़ियों से सजाया जाता है,** जिसे समृद्धि, अच्छी फसल और उत्तम स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता है। मंदिर की इस अनोखी परंपरा ने इसे पूरे दक्षिण भारत में आस्था और भव्यता का विशेष केंद्र बना दिया है।	 New Indian Express
8.	**सिंदूर खेला की अनोखी परंपरा, जहाँ माँ दुर्गा को मिलता है भव्य विदाई** **स्थान:** रांची, झारखंड **मंदिर:** दुर्गा बाड़ी मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** 100 वर्षों से अधिक पुरानी दुर्गा पूजा परंपरा, विशेषकर विजयादशमी पर सिंदूर खेला **विवरण:** रांची का दुर्गा बाड़ी मंदिर झारखंड में दुर्गा पूजा का प्रमुख केंद्र है, जहाँ पिछले सौ वर्षों से भी अधिक समय से भव्य पूजा आयोजित होती आ रही है। मंदिर की खासियत यह है **कि यहाँ विजयादशमी के दिन बंगाली हिंदू परंपरा के अनुरूप सिंदूर खेला का आयोजन होता है।** इस अवसर पर विवाहित महिलाएँ माँ दुर्गा को सिंदूर अर्पित करती हैं और **एक-दूसरे को भी सिंदूर लगाकर सौभाग्य और पति की दीर्घायु की कामना करती हैं।** इस प्राचीन परंपरा ने दुर्गा बाड़ी मंदिर को न केवल झारखंड बल्कि पूरे पूर्वी भारत में आस्था का विशेष केंद्र बना दिया है।	 ANI News

9.	**सोडा पूजा: 16 दिनों में बदलते माँ दुर्गा के बेष और भक्तों की आस्था** **स्थान:** कट्टक, ओडिशा **मंदिर:** चंडी मंदिर और गडाचंडी मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** 16 प्रकार की पूजा (सोडा पूजा) औरमाँदुर्गा के 16 अलग-अलग अवतार **विवरण:** ओडिशा के कट्टक शहर मेंनवरात्र और विजयादशमी के अवसर पर चंडी मंदिर और गडाचंडी मंदिर में सोडा पूजा का आयोजन किया जाता है। इस पूजा मेंमाँदुर्गा अलग-अलग दिनों में 16 प्रकार के अवतार धारण करती हैं, जिनमें पहनावे, गहने और विशेष रूप से चेहरे का रूप बदलता है। **श्रद्धालुओं का मानना है कि सोडासा उपचार पूजा के दौरानमाँदुर्गा के दर्शन से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।** इस अवसर पर मंदिरों को फूलों, रंग-बिरंगी सजावट और फेस्टून से सजाया जाता है। पहले दिन देवी **'सुन बेषा' में प्रकट होती हैं, जबकि अन्य दिनों में 'कमला बेषा', 'भुवनेश्वरी बेषा' आदि में।**	 Odisha Bytes
10.	**बीकानेर का करणी माता मंदिर:माँदुर्गा का अवतार, जहाँ रहते हैं हजारों चूहे** **स्थान:** देशकोट, बीकानेर, राजस्थान **मंदिर:** करणी माता मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ:माँ**दुर्गा का अवतार करणी माता, हजारों 'कब्बा' (चूहे) का मंदिर **विवरण:** राजस्थान के बीकानेर जिले के देशकोट में स्थित करणी माता मंदिरमाँदुर्गा के अवतार करणी माता को समर्पित है। **मंदिर में करीब 25,000 काले चूहे (कब्बा) रहते हैं, जिन्हें देवी का स्वरूप माना जाता है। श्रद्धालु उनके साथ भोजन साझा करते हैं, क्योंकि यह भोजन देवी की कृपा लाता है।** **मंदिर में सफेद चूहे का दर्शन अत्यंत शुभ माना जाता है और यह देवी करणी माता और उनके चार पुत्रों का प्रतीक माना जाता है।** यदि कोई चूहा मर जाता है, तो उसे सोने या चांदी के समान आकार के चूहे से प्रतिस्थापित करना अनिवार्य है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर चूहे बाहर नहीं जाते और मंदिर का निर्माण 20वीं सदी में बीकानेर के महाराज गंगा सिंह ने मुगल शैली में कराया था।	 Boldsky

11.	**प्रयागराज में पालने की पूजा से जुड़ा माँ दुर्गा का अनोखा शक्ति पीठ** **स्थान:** प्रयागराज, उत्तर प्रदेश **मंदिर:** आलोक शंकरी शक्तिपीठ **विशेषताएँ/मान्यताएँ:** मंदिर मेमाँदुर्गा की प्रतिमा नहीं, बल्कि पालना रखी जाती है **विवरण:** प्रयागराज के संगम तट पर स्थित आलोक शंकरी शक्तिपीठमाँसती के दाहिने हाथ के पंजे के गिरने के स्थान पर स्थापित है। **यहांमाँकी प्रतिमा नहीं, बल्कि पालना रखी जाती है, जिसे देवी की शक्ति का प्रतीक माना जाता है।** यह पालना माता और पुत्र के बीच के स्नेह का प्रतीक है। **भक्त मानते हैं कि यहां रक्षा सूत्र बांधने और पालने की पूजा करने से मनोकामना पूरी होती है।** नवरात्रि में देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु यहां आते हैं। मंदिर मेंमाँशीतला, बजरंगबली और भगवान शिव (ललतेश्वर महादेव रूप में) की उपासना भी होती है।	 GNT News
12.	**शिमला का श्राई कोटि माता मंदिर, जहां विवाहित जोड़ों के लिए साथ में दर्शन वर्जित** **स्थान:** शिमला, हिमाचल प्रदेश **मंदिर:** श्राई कोटि माता मंदिर /माँदुर्गा मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ** : विवाहित जोड़ों का साथ में दर्शन वर्जित **विवरण:** शिमला में स्थित श्राई कोटि माता मंदिरमाँदुर्गा को समर्पित प्राचीन मंदिर है। यहां की विशेषता यह है कि **विवाहित जोड़ों को साथ में दर्शन या पूजा करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि धार्मिक मान्यता के अनुसार ऐसा करने से दांपत्य जीवन में परेशानियां आ सकती हैं।** पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान कार्तिकेय के विवाह न करने और देवी पार्वती के श्राप के कारण यह नियम लागू हुआ। मंदिर समुद्रतल से लगभग 11,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है ।	 News 24
13.	**दुनिया का पहला मंदिर, जहांमाँदुर्गा के होंठों की होती है पूजा** **स्थान:** माउंट आबू, राजस्थान **मंदिर:** अधर देवी मंदिर **विशेषताएँ/मान्यताएँ** : माता दुर्गा के होंठों का शक्तिपीठ; नवरात्र के अवसर पर विशेष पूजा **विवरण:** अधर देवी मंदिर माता दुर्गा के 51 शक्तिपीठों में से 15वां माना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, माता सती के पार्थिव शरीर के अंगों में से यहां माता दुर्गा के होंठ गिरे थे, इसीलिए इसे अधर देवी कहा जाता है। मंदिर गुफा के अंदर स्थित है और दर्शन के लिए 365 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।नवरात्र के छठे दिन यहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है, जिसमें अखंड पाठ और महायज्ञ का आयोजन होता है। मंदिर में माता दुर्गा के गुप्त स्वरूप माता कात्यायनी की पूजा होती है। धार्मिक मान्यता है कि माता दुर्गा के दर्शन मात्र से भक्तों के कष्ट दूर होते हैं और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।	 Ndtv

14.	**गोड्डा का शक्तिपीठ, 1100 ई. से पहले बना दुर्गा मंदिर** **स्थान:** बारकोप, गोड्डा, झारखंड **मंदिर:** चंडी दुर्गा मंदिर (900 वर्ष से अधिक पुराना) **विशेषता:** तांत्रिक विधि से पूजा, मंदिर की दीवारें और पाया 1100 ई. से पहले से जस के तस, नवरात्र में हजारों भक्तों की भीड़, पुत्र प्राप्ति की मान्यता। **विवरण:** गोड्डा के बारकोप स्थित यह दुर्गा मंदिर 900 साल से भी अधिक पुराना है और माना जाता है कि इसका निर्माण 1100 ई. से पहले हुआ था। मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि सदियों बीत जाने के बाद भी इसकी दीवारों और नींव में कोई दरार नहीं आई है।नवरात्र में यहां दूर-दूर से भक्त आते हैं, सप्तमी पर दुर्गा प्रतिमा का मंदिर में प्रवेश कराया जाता है और **अष्टमी पर हजारों महिलाएं डलिया चढ़ाती हैं।** माना जाता है कि यहां अष्टमी के दिन सच्चे मन से डलिया चढ़ाने वाली महिलाओं को पुत्र प्राप्ति होती है। **दशमी पर यहां बड़ी संख्या में बकरों की बलि दी जाती है** और अंत में मूर्ति का विसर्जन प्राचीन राजा माता पोखर तालाब में किया जाता है	 News18 गोड्डा में 900 साल पुराना देवी मंदिर, यहां तांत्रिक विधि से होती है भगवती की पूजा, जानें महिमा Last Updated: October 13, 2023, 13:49 IST Shardiya Navratri: नवरात्रि के दौरान एक पूजा से 10 पूजा तक रोजाना हजारों श्रद्धालु यहां आते हैं. सप्तमी पूजा के दिन दुर्गा मां की मूर्ति मंदिर के अंदर प्रवेश कराई जाती है. वहीं, मूर्ति प्रवेश से पहले स... और पढ़ें आदित्य आनंद/गोड्डा. गोड्डा के बारकोप में 900 साल से अधिक पुराने दुर्गा मंदिर में तांत्रिक विधि से पूजा अर्चना होती है. मान्यता है कि इस शक्तिशाली मंदिर में मां दुर्गा अपने भक्तों के हर दुख-दर्द को मिटाती हैं. वहीं, सैकड़ों वर्ष पुराने इस मंदिर की दीवार व पाया आज भी एक समान बरकरार हैं. बताया जाता है कि जब बरकोप स्टेट के राजा महाराज देव ब्रह्म हुआ करते थे, तब उनके समय से भी पहले यह मंदिर बना था. अब तक इस मंदिर की दीवारों में दरार तक नहीं आई है. महाराज के वंशज निरंजन ब्रह्म ने बताया कि उनके पास मौजूद दस्तावेज के अनुसार यह मंदिर सन 1100 ई से भी पहले बनाया गया है. वहीं बरकोप गांव के निवासी विश्वेश्वर सिंह ने बताया कि यूं तो इस मंदिर की काफी मान्यताएं हैं, लेकिन खासकर दुर्गा पूजा में यहां हजारों लोगों की भीड़ लगती है. नवरात्रि के दिनों में दूर-दूर से भक्त मां के दर्शन करने आते हैं.